

# न्यूज टुडे

## केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय (MoL&E) ने "राष्ट्रीय श्रम एवं रोजगार नीति - श्रम शक्ति नीति 2025" का मसौदा जारी किया

यह मसौदा नीति 2047 तक विकसित भारत की राष्ट्रीय आकांक्षा के अनुरूप निष्पक्ष, समावेशी और फ्यूचर-रेडी रोजगार के स्वरूप के लिए एक नई दृष्टि प्रस्तुत करती है।

श्रम शक्ति नीति 2025 के प्रमुख रणनीतिक उद्देश्य

- यूनिवर्सल और पोर्टेबल सामाजिक सुरक्षा: इसमें कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO), प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PM-JAY), ई-श्रम जैसी योजनाओं को एकीकृत करके सार्वभौमिक सामाजिक सुरक्षा खाता (USSA) बनाने का प्रस्ताव किया गया है।
- व्यावसायिक (ऑक्यूपेशनल) सुरक्षा और स्वास्थ्य (OSH): इसमें रोजगार की प्रकृति से जुड़े खतरों और महिला रोजगार अनुकूल मानकों के साथ व्यावसायिक सुरक्षा और स्वास्थ्य संहिता, 2020 को लागू करने का समर्थन किया गया है।
- रोजगार और भविष्य की तैयारी: इसमें केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय को 'रोजगार प्रदान करने को सुविधाजनक बनाने वाली संस्था' के रूप में भूमिका बढ़ाने तथा 'रोजगार के लिए डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर' के रूप में नेशनल करियर सर्विस (NCC) का उपयोग करने की बात कही गई है।
- महिला एवं युवा सशक्तीकरण: इसके तहत 2030 तक श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाकर 35% तक करने का उल्लेख है।
- नियमों के अनुपालन और रोजगार के औपचारीकरण को आसान बनाना: सिंगल-विंडो डिजिटल अनुपालन प्रणाली के माध्यम से MSMEs के लिए स्व-प्रमाणन और सरलीकृत रिटर्न प्रक्रिया सुनिश्चित की जाएगी।
- प्रौद्योगिकी और ग्रीन ट्रांजिशन का लाभ उठाना: इसके तहत ग्रीन जॉब्स को बढ़ावा देना शामिल है।
- यूनिफाइड डिजिटल लेबर गवर्नेंस फ्रेमवर्क के माध्यम से संस्थानों, डेटा प्रणालियों और अलग-अलग अधिकार क्षेत्रों में सामंजस्य सुनिश्चित किया जाएगा।

### संस्थागत और डिजिटल संरचना



**राष्ट्रीय स्तर पर:** राष्ट्रीय श्रम एवं रोजगार नीति कार्यान्वयन परिषद (NILPI) - यह केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री की अध्यक्षता वाला शीर्ष अंतर-मंत्रालयी संस्था होगी।



**राज्य स्तर पर:** राज्य श्रम मिशन - यह प्रासंगिक कार्यान्वयन और समन्वय सुनिश्चित करेगा।



**जिला स्तर पर:** जिला श्रम संसाधन केंद्र (DLRCs) - ये श्रमिकों के पंजीकरण, कोशल अनुकूल रोजगार सुनिश्चित करने, कोशल विकास, स्टार्टअप इनक्यूबेशन और शिकायत निवारण के लिए सिंगल-विंडो हब होंगे।

## एक अध्ययन के अनुसार, बढ़ते एयरोसोल प्रदूषण के कारण भारत में धूप के घंटे (Sunshine Hours) कम हो रहे हैं

वैज्ञानिकों ने पिछले तीस वर्षों में हुई "सोलर डिमिंग" यानी पृथ्वी पर सूर्य के कम प्रकाश पहुंचने का कारण मानवजनित उच्च एयरोसोल उत्सर्जन को बताया है।

एयरोसोल प्रदूषण के स्रोत हैं: औद्योगिक उत्सर्जन, बायोमास दहन और वाहन से प्रदूषण।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

धूप में कमी (Decline in Sunshine):

- उत्तर भारत के मैदानों में धूप के घंटे में सबसे तेज़ यानी प्रतिवर्ष 13.1 घंटे की गिरावट दर्ज की गई।
- पूर्वोत्तर क्षेत्र: यहां धूप के घंटों में मौसमी स्थिरता देखी गई, यानी बहुत अधिक गिरावट नहीं हुई। इसका कारण स्थानीय मौसम और ट्वॉमी इफेक्ट (Twomey effect) है।
- टूमी इफेक्ट: यह बताता है कि कैसे बड़े हुए मानवजनित एयरोसोल उत्सर्जन बादलों को अधिक चमकदार बना देते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ये एयरोसोल्स अधिक छोटी बूंदों का निर्माण करते हैं, जो अधिक सूर्य-प्रकाश को परावर्तित करती हैं और जलवायु को ठंडा करती हैं।
- सोलर डिमिंग के कारण: दीर्घकालिक सोलर डिमिंग का मुख्य कारण औद्योगिक प्रदूषण से उत्पन्न एरोसोल की उच्च मात्रा है।

ये एरोसोल संघनन केंद्रक (Condensation nuclei) के रूप में कार्य करते हैं। इससे बादलों के जलकण छोटे और लंबे समय तक टिके रहते हैं। परिणामस्वरूप, आकाश लंबे समय तक बादलों से ढका रहता है।

एयरोसोल और इसके प्रकार

- एयरोसोल: ये वायुमंडल (गैस माध्यम) में निलंबित अत्यंत लघु ठोस या तरल कण होते हैं। ये दो प्रकार के हैं:
  - प्राथमिक एयरोसोल: वे कण जो सीधे उत्सर्जित होते हैं, उदाहरण के लिए-समुद्री लवण स्प्रे (सी-स्प्रे), धूल, धुआं और ज्वालामुखीय राख।

एरोसोल के प्रभाव

- जलवायु और मौसम पर प्रभाव: एरोसोल सूर्य के प्रकाश को बिखेरते या अवशोषित करते हैं। इससे स्थानीय स्तर पर तापमान ठंडा या गर्म रह सकता है। इस तरह यह बादलों के निर्माण, मानसून के पैटर्न और वर्षा के वितरण को भी प्रभावित करता है।
- स्वास्थ्य पर प्रभाव: सूक्ष्म एरोसोल कण फेफड़ों में जलन, श्वसन तंत्र की बीमारी, हृदय रोग, और असमय मृत्यु का कारण बन सकते हैं।
- पर्यावरण पर प्रभाव: खनिज के धूलकण पर्यावरण में पोषक तत्वों की आपूर्ति करते हैं। इससे अमेज़न वर्षावन की उर्वरता और महासागर में फाइटोप्लॉकटन की वृद्धि जैसी प्रक्रियाएं प्रभावित होती हैं।
- सौर ऊर्जा पर प्रभाव: एरोसोल सूर्य के प्रकाश को अवरोध करते हैं, जिससे सोलर पैनल्स तक पहुंचने वाला प्रकाश कम हो जाता है। इससे सौर ऊर्जा उत्पादन कम हो जाता है।

गौण एयरोसोल: ये रासायनिक अभिक्रियाओं के माध्यम से गैसों से बनते हैं, उदाहरण के लिए-औद्योगिक उत्सर्जन या बायोमास दहन से उत्पन्न सल्फेट्स।

## रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज ने 2025 के रसायन-विज्ञान के नोबेल पुरस्कार के विजेताओं की घोषणा की

रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार 2025 सुसुमु कितागावा, रिचर्ड रॉबसन और उमर यागी को प्रथम मेटल ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क्स (MOF) के विकास में उनकी भूमिका के लिए प्रदान किया गया है।

इन वैज्ञानिकों के पथ-प्रदर्शक शोध-कार्य से हजारों अलग-अलग मेटल ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क्स का विकास संभव हुआ है।

मेटल ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क्स (MOF) के बारे में

यह आणविक संरचना का एक रूप है, जो छोटी संरचनाओं में विशाल स्थान को समाहित करती है, ठीक वैसे जैसे हैरी पॉटर उपन्यासों में हर्मायनी ग्रेंजर का बैग। ये लघु संरचनाएं छोटी सी जगह में विशाल गैसों का भंडारण करती हैं।

एक ग्राम MOF पदार्थ में इतने अधिक छिद्र हो सकते हैं, जिनका आंतरिक पृष्ठीय क्षेत्र (सर्फेस एरिया) एक फुटबॉल के मैदान के बराबर हो सकता है।

ये छिद्र छोटे आणविक कक्षों की तरह कार्य करते हैं जो गैसों, आयनों और अन्य अणुओं को ट्रेप, पृथक, रूपांतरित या उनका परिवहन कर सकते हैं।

इस तरह से, मेटल ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क्स आणविक होटलों की तरह होते हैं, जिनके अनगिनत दरवाजे होते हैं, जो केवल कुछ विशेष पदार्थों को ही स्वीकार या प्रवेश देने के लिए प्रोग्राम किए जाते हैं।

मेटल ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क्स संरचना कार्बनिक (कार्बन-आधारित) अणुओं द्वारा जुड़े धातु आयनों से बनी होती है, जो बड़े, छिद्र-युक्त स्थान वाला एक लि-आयामी नेटवर्क या जाल बनाती है।

MOF की सबसे खास बात इसकी संरचना (porosity) है। इसी वजह से इसमें गैस या द्रव्य को कैचर करके रखा जा सकता है।

MOFs में उपयोग किए गए बिल्डिंग ब्लॉक्स को बदलकर, रसायन विज्ञानी इनके छिद्रों के आकार और बनावट नियंत्रित कर सकते हैं। इससे वे विशिष्ट पदार्थों को कैचर और स्टोर करने के लिए इन्हें डिज़ाइन कर सकते हैं।

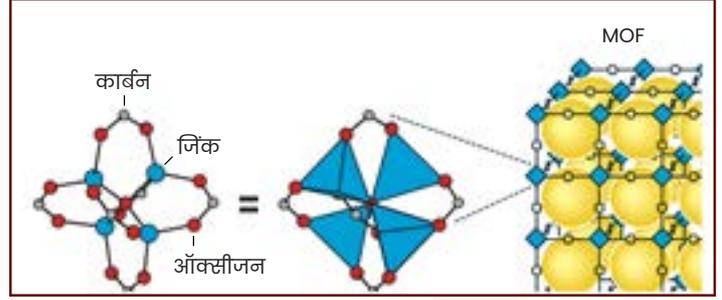
### मेटल ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क्स (MOF) के उपयोग

जल संचयन में: रेगिस्तान जैसी जगहों पर MOF वायुमंडल से रात में जल वाष्प को अपने छिद्रों में कैचर कर सकते हैं और फिर इसे पेयजल में उपयोग किया जा सकता है।

प्रदूषकों को हटाने में: MOF परफ्लुओरोएल्काइल और पॉलीफ्लुओरोएल्काइल पदार्थ (PFAS) जैसे हानिकारक पदार्थों को फिल्टर कर सकते हैं, और प्रदूषित जल में कच्चे तेल और एंटीबायोटिक दवाओं को विघटन में मदद कर सकते हैं।

औद्योगिक उपयोग: अपशिष्ट जल से दुर्लभ-भू तत्वों (रेयर अर्थ एलिमेंट्स) को निकालने, हाइड्रोजन भंडारण और कार्बन डाइऑक्साइड को कैचर करने के लिए भी इनका इस्तेमाल किया जा सकता है।

स्वास्थ्य देखभाल में: ये शरीर में दवाइयों को सही जगह पहुंचाने, पर्यावरण से अत्यंत विषैली गैसों को नियंत्रित करने तथा एंजाइम्स को एनकैप्सुलेट कर एंटीबायोटिक दवाओं के अंशों को विखंडित करने में महत्वपूर्ण साबित हो रहे हैं।



## नीति आयोग ने "समावेशी सामाजिक विकास के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI)" पर ऐतिहासिक रोडमैप जारी किया

इस रोडमैप का उद्देश्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और अन्य उन्नत तकनीकों की क्षमता का उपयोग करके भारत में असंगठित क्षेत्र के 490 मिलियन श्रमिकों की आजीविका में परिवर्तन लाना है।

भारत में असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की वर्तमान स्थिति

सबसे अधिक रोजगार देने वाला क्षेत्रक: देश की लगभग 90% श्रमशक्ति असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं।

कम उत्पादकता: इनकी औसत उत्पादकता लगभग 5 डॉलर प्रति घंटा है, जो राष्ट्रीय औसत का लगभग आधा है।

सामाजिक सुरक्षा कवरेज की कमी: असंगठित क्षेत्र के केवल 48% श्रमिकों को ही सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के सामने प्रमुख चुनौतियां

अस्थिर वित्तीय स्रोत: नियमित रूप से पारिश्रमिक नहीं मिलना, पारिश्रमिक भुगतान में देरी, अनुबंधों की कमी, और समय पर कई लाभ नहीं मिलना।

बाजार और मांग तक पहुंच: श्रम बाजार विभाजित होना, रोजगार करने के प्रमाण की कमी, और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उनकी विजिबिलिटी कम होना।

कौशल और तकनीक अपनाने की कमी: इनमें पुरानी कार्यप्रणालियां, औपचारिक प्रशिक्षण का अभाव (केवल 2-5% को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त), तथा श्रमिक डेटा की कमी शामिल हैं।

सामाजिक सुरक्षा और व्यावसायिक सुरक्षा: इनमें कार्यस्थल पर सुरक्षा मानकों की कमी, स्वास्थ्य बीमा और पेंशन का लाभ नहीं मिलना तथा कार्य की वजह से दुर्घटना की स्थिति में मुआवजा नहीं मिलना जैसी चुनौतियां शामिल हैं।

उत्पादकता की कमी: इसकी वजहें हैं, मैनुअल तरीके से कामकाज होना, मशीनीकरण की कमी, और डिजिटल उपकरणों का अभाव।

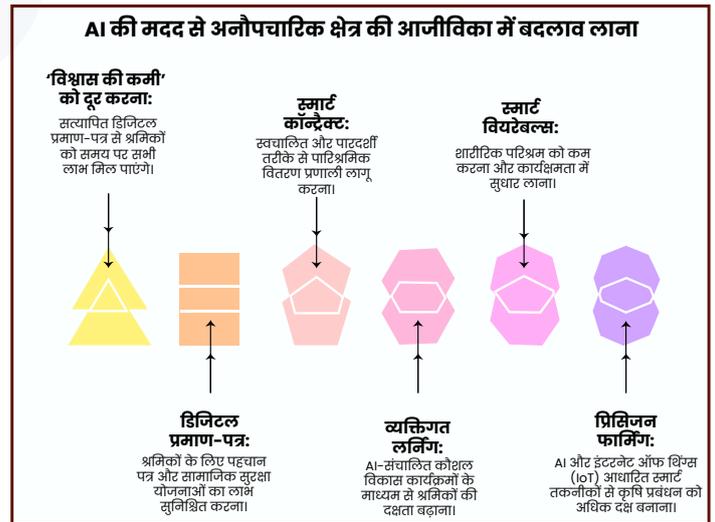
नीति आयोग की प्रमुख सिफारिशें

मिशन डिजिटल श्रमसेतु: AI के माध्यम से अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों को सशक्त बनाने के लिए एक राष्ट्रीय मिशन की शुरुआत की जानी चाहिए। इस कदम से भविष्य के लिए तैयार श्रम बल सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

समावेशी AI फ्रेमवर्क: साक्षरता और भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करने के लिए बहुभाषी, वॉयस-फर्स्ट AI टूल विकसित करने की आवश्यकता है।

बहु-हितधारक सहभागिता: राज्यों और सामुदायिक नेटवर्क के माध्यम से स्थानीय स्तर पर योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाए।

मौजूदा डिजिटल योजनाओं का एकीकरण: योजनाओं को प्रभावी बनाने के लिए ई-श्रम और उद्यम जैसे प्लेटफॉर्म के साथ AI को एकीकृत किया जाना चाहिए।



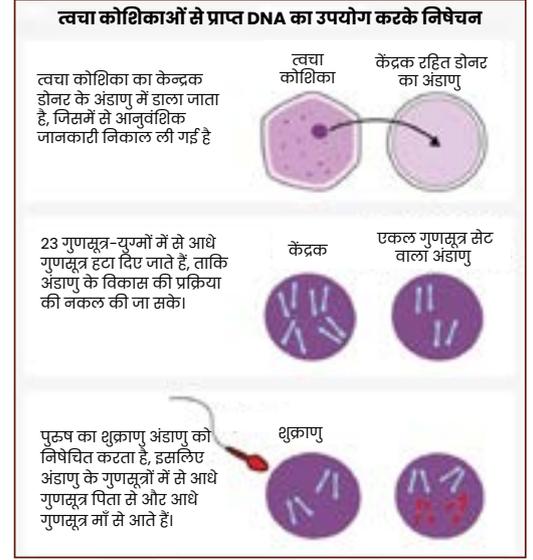
## शोधकर्ताओं ने मानव त्वचा कोशिकाओं से निषेचन योग्य अंडाणु विकसित किया

वैज्ञानिकों ने साधारण त्वचा कोशिकाओं के DNA का उपयोग करके निषेचन योग्य अंडाणु के समान कोशिकाएं विकसित की हैं। इससे इनफर्टिलिटी से जुड़े अनुसंधान के लिए एक बड़ी सफलता मिली है।

- यह खोज इन विट्रो गैमीटोजेनेसिस (IVG) नामक तकनीक के माध्यम से इनफर्टिलिटी के उपचार के लिए एक संभावित मार्ग प्रदान करती है।
  - ⊙ IVG वास्तव में प्रयोगशाला में युग्मक यानी गैमीट (फंक्शनल अंडाणु या शुक्राणु) उत्पन्न करने की प्रक्रिया है। इसमें रोगी की स्वयं की आनुवंशिक सामग्री का उपयोग किया जाता है।
    - इन आनुवंशिक सामग्रियों में आइसोलेटेड जर्म कोशिकाएं या इंड्यूस्ड प्लुरिपोटेंट स्टेम सेल्स (iPSC) शामिल हैं।

नए अनुसंधान के बारे में

- अंडाणु बनाने के लिए, शोधकर्ताओं ने मानव त्वचा कोशिका के न्यूक्लियस को डोनर के अंडाणु में प्रत्यारोपित किया, जिसके न्यूक्लियस को पहले हटा दिया गया था।
  - ⊙ इस तकनीक को सोमैटिक सेल न्यूक्लियर ट्रांसफर (SCNT) के नाम से जाना जाता है। यह इन विट्रो गैमीटोजेनेसिस (IVG) का ही एक प्रकार है।
- हालांकि, IVG से जुड़ी मुख्य चुनौती यह थी कि शोधकर्ताओं को सुनिश्चित करना था कि रिप्रोग्राफ्ड किए गए निषेचित अंडाणु में गुणसूत्रों की सही संख्या हो।
  - ⊙ प्रत्येक युग्मक (शुक्राणु और अंडाणु) में 23 गुणसूत्र होते हैं, जो त्वचा कोशिकाओं जैसी सामान्य मानव कोशिकाओं में पाए जाने वाले 46 गुणसूत्रों का आधा है।
  - ⊙ उत्पन्न किये गए अंडाणु में से अतिरिक्त 23 गुणसूत्रों को हटाने के लिए शोधकर्ताओं ने एक तकनीक विकसित की, जिसे “माइटोमायोसिस” कहा जाता है। यह तकनीक प्राकृतिक कोशिका विभाजन की नकल करती है और इस तरह से 23 गुणसूत्रों के एक सेट को हटा देती है।



## अन्य सुर्खियां



### हिम तेंदुआ

हिम तेंदुओं में आनुवंशिक विविधता बहुत कम होती है। इसका संभावित कारण हाल की इनब्रीडिंग की बजाय उनके विकासवादी चरण में लगातार कम संख्या का होना है।

- आनुवंशिक विविधता: यह किसी आबादी या प्रजाति के अंदर विरासत में मिले गुण और विभिन्न जीनों की कुल विविधता होती है।
  - ⊙ यह किसी प्रजाति की पर्यावरण में बदलावों और तनावों के प्रति ढलने एवं जीवित रहने की क्षमता के लिए महत्वपूर्ण है।



हिम तेंदुए के बारे में

- भौगोलिक क्षेत्र: दक्षिण और मध्य एशिया के पर्वतीय क्षेत्रों की प्रमुख प्रजाति। यह प्रजाति 12 देशों में प्राप्त होती है।
  - ⊙ भारत में यह प्रजाति जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड (पश्चिमी हिमालय), सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश (पूर्वी हिमालय) में पाई जाती है।
- संरक्षण स्थिति:
  - ⊙ IUCN रेड लिस्ट: वल्नरेबल।
  - ⊙ वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972: अनुसूची I में सूचीबद्ध।
- इसे लद्दाख और हिमाचल प्रदेश का राजकीय पशु (स्टेट एनिमल) घोषित किया गया है।
- विशेषताएँ: ये दहाड़ते नहीं हैं, ये एकांत पसंद जीव हैं। ये अधिकतर सुबह और शाम के समय सक्रिय रहते हैं।



### इलेक्ट्रॉनिक बैंक गारंटी (e-BGs)

नेशनल ई-गवर्नेंस डिवीजन और नेशनल ई-गवर्नेंस सर्विसेज लिमिटेड (NeSL) ने e-बैंक गारंटी के लिए डिजिटल डॉक्यूमेंट प्रक्रिया को एकीकृत करने के लिए समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं।

- ‘नेशनल ई-गवर्नेंस सर्विसेज लिमिटेड (NeSL)’ भारत की पहली इनफार्मेशन यूटिलिटी है। यह इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी बोर्ड ऑफ इंडिया (IBBI) के यहां पंजीकृत है। NeSL ऋणों और क्लेम के कानूनी साक्ष्य के रूप में काम करती है।
- इलेक्ट्रॉनिक बैंक गारंटी (e-BGs) के बारे में
  - इसने कागज़ी दस्तावेज के रूप में बैंक गारंटी जारी करने की पारंपरिक प्रक्रिया की जगह ली है।
  - यह बैंक गारंटी जारी करने और लाभार्थियों तक उसे पहुंचाने के समय को कम कर देती है।
  - बैंक गारंटी वास्तव में एक वित्तीय साधन है। इसमें एक बैंक थर्ड पार्टी (लाभार्थी) को यह वादा करता है कि यदि उनके ग्राहक (आवेदक) किसी अनुबंध के दायित्व को पूरा करने में विफल रहते हैं, तो बैंक लाभार्थी को भुगतान करेगा।



### एग्रीएनिक्स प्रोग्राम

केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने एग्रीएनिक्स प्रोग्राम के तहत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की घोषणा की है।

एग्रीएनिक्स प्रोग्राम के बारे में

- यह MeitY का एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है। यह कृषि और पर्यावरण के क्षेत्र में प्रौद्योगिकियों संबंधी अनुसंधान और विकास करने, तथा उसे लागू करने, उसका प्रदर्शन करने और उसके व्यावसायिक उपयोग से संबंधित है।
- इसे सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (C-DAC), कोलकाता द्वारा नोडल एजेंसी के रूप में लागू किया जा रहा है।



### प्लूटोनियम प्रबंधन और निपटान समझौता (PMDA)

रूस की संसद के निचले सदन ने संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ प्लूटोनियम प्रबंधन और निपटान समझौता (PMDA) से हटने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

गौरतलब है कि रूस ने 2016 में अमेरिकी प्रतिबंधों का हवाला देते हुए इस समझौते के कार्यान्वयन को निलंबित कर दिया था।

प्लूटोनियम प्रबंधन और निपटान समझौता के बारे में

- इस समझौते पर वर्ष 2000 में हस्ताक्षर किए गए थे।
- यह अमेरिका और रूस, दोनों को अपने पास रखे वेपंस-ग्रेड प्लूटोनियम में से प्रत्येक को कम-से-कम 34 मीट्रिक टन इस तरह से निपटान करने के लिए बाध्य करता है कि वापस इनका उपयोग नहीं किया जा सके।
- प्लूटोनियम: यह एक रेडियोएक्टिव सामग्री है जिसकी परमाणु संख्या 94 है। इसका गलनांक उच्च होता है। यह प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला सबसे भारी तत्व है।
- निपटान लक्ष्य: प्लूटोनियम को अधिक सुरक्षित रूपों में परिवर्तित करना (जैसे MOX ईंधन, रिएक्टर विकिरण में)।



### ग्लोबल इलेक्ट्रिसिटी मिड-ईयर इनसाइट्स 2025

एनर्जी थिंक टैंक एम्बर की रिपोर्ट के अनुसार, 2025 की पहली छमाही में कोयले को पीछे छोड़ती हुई नवीकरणीय ऊर्जा विश्व में सबसे बड़ा बिजली स्रोत बन गई।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में जीवाश्म ईंधन उत्पादन: चीन और भारत जैसी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में जीवाश्म ईंधन से बिजली का उत्पादन घटा है। ऐसा इसलिए क्योंकि वहाँ स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों की वृद्धि, बिजली की मांग में वृद्धि से अधिक है।
- उत्सर्जन: विश्व में बिजली की मांग में 2.6% की वृद्धि के बावजूद उत्सर्जन कम हुआ है।
- चीन में लगभग 46 मिलियन टन CO2 और भारत में लगभग 24 मिलियन टन CO2 उत्सर्जन कम हुआ है। वहीं यूरोपीय संघ (EU) और अमेरिका (US) में उत्सर्जन बढ़ा है।
- स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों की वृद्धि: सौर ऊर्जा (+25%) और पवन ऊर्जा (+29%) में रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई है। इससे कुल बिजली स्रोत में स्वच्छ ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़ी है।



### प्रधान मंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (पीएम-कुसुम)

भारत 'अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)' के माध्यम से अपनी प्रमुख योजना पीएम-कुसुम को बढ़ावा देने और विकासशील देशों में इसकी सफलता का लाभ प्रदान करने की योजना बना रहा है।

पीएम-कुसुम योजना के बारे में

- मंत्रालय: केंद्रीय नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय।
- यह योजना 2019 में शुरू की गई थी। इसके उद्देश्य हैं: किसानों को ऊर्जा और जल सुरक्षा प्रदान करना, कृषि क्षेत्र को डीजल-मुक्त बनाना और पर्यावरण प्रदूषण को कम करना।
- लक्ष्य: मार्च 2026 तक लगभग 34,800 मेगावाट (MW) की सौर ऊर्जा क्षमता जोड़ना।
- योजना के घटक:
  - घटक-A: लघु सौर ऊर्जा संयंत्रों के माध्यम से 10,000 मेगावाट की सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित करना।
  - घटक-B: स्टैंड-अलोन सोलर कृषि पंपों की स्थापना करना।
  - घटक-C: ग्रिड से जुड़े कृषि पंपों का सौरकरण करना, जिसमें फीडर स्तर का सौरकरण भी शामिल है।



### ग्रेट ग्रीन वॉल इनिशिएटिव

महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के बावजूद अफ्रीका में ग्रेट ग्रीन वॉल परियोजना को बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

ग्रेट ग्रीन वॉल इनिशिएटिव के बारे में

- प्रारंभ: इसे 2007 में अफ्रीकी संघ द्वारा शुरू किया गया था।
- उद्देश्य:
  - 2030 तक 100 मिलियन हेक्टेयर निम्नीकृत (डीग्रेडेड) भूमि का पुनरुद्धार करना; 250 मिलियन टन कार्बन को अवशोषित करना और 10 मिलियन ग्रीन जॉब्स (हरित रोजगार) उत्पन्न करना।
  - साहेल क्षेत्र में कृषि योग्य भूमि का विस्तार करना। यह क्षेत्र अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान से सटा हुआ है।
  - जलवायु परिवर्तन, सूखा, अकाल, संघर्ष और प्रवास के लिए प्रभावी समाधान खोजना।



## सुर्खियों में रहे स्थल



### म्यांमार (राजधानी: नैप्यीदा)

हाल ही में, म्यांमार की सेना ने प्रदर्शनकारियों पर बम गिराए।

भौगोलिक अवस्थिति

- यह दक्षिण-पूर्व एशिया की मुख्य भूमि के पश्चिमी भाग में स्थित है।
- सीमावर्ती राष्ट्र: इसके उत्तर और उत्तर-पूर्व में चीन, पूर्व में लाओस, दक्षिण-पूर्व में थाईलैंड, पश्चिम में बांग्लादेश, उत्तर-पश्चिम में भारत है।
- सीमावर्ती जल निकाय: इसके दक्षिण में अंडमान सागर, और दक्षिण-पश्चिम में बंगाल की खाड़ी है।

भौगोलिक विशेषताएं

- प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएं: रखाइन पर्वत, शान पठार, दावना पर्वतमाला, तेनासेरिम पर्वतमाला आदि।
- सबसे ऊँचा स्थान: माउंट हकाकाबो रज़ी।
- प्रमुख नदियाँ: इरावदी, चिंदविन, सितांग, सालवीन, यांगून नदी।

